Chapter 3

bihar board class 8th science notes फसल : उत्पादन एवं प्रबंधन

फसल : उत्पादन एवं प्रबंधन

अध्ययन सामग्री-रोटी, कपड़ा और मकान मानव की तीन न्यूनतम आवश्यकताएँ हैं। जिस प्रकार वायु एवं जल हमारे जीवन के लिए तथा पौधे के जीवन के लिए आवश्यक तत्वों में से एक माने जाते हैं। ठीक उसी प्रकार भोजन भी हमारे जीवन के लिए आवश्यक तत्व है। भोजन वह भोज्य पदार्थ है जो हमारे शारीरिक एवं मानसिक विकास को ऊर्जा प्रदान करता है। इतना ही नहीं, मनुष्य को हरेक काम करने में ऊर्जा की आवश्यकता होती है जो हमें भोजन से ही प्राप्त होती है। पौधे अपना भोजन स्वयं बना लेते हैं। परन्तु मानव तथा अन्य जन्तु जीवित रहने के लिए भोजन कहाँ से प्राप्त करते हैं। मानव एवं जन्तु अपना भोजन पौधों, जन्तुओं अथवा दोनों से प्राप्त करते हैं। इसलिए इनका नियमित उत्पादन एवं प्रबंधन आवश्यक है। हमारा देश भारत एक कृषि प्रधान देश है। इतना ही नहीं, हमारा राज्य बिहार भी कृषि प्रधान राज्य है। यहाँ की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर आश्रित है। कृषि यहाँ की जनता की मुख्य पेशा है। अत: फसल का उत्पादन अधिक-से-अधिक हो इसके लिए उत्पादन तथा उसके प्रबंधन पर ध्यान देना आवश्यक है।

फसल, उत्पादन एवं प्रबंधन से तात्पर्य यह है कि अधिक-से-अधिक फसल का उत्पादन हो जिसके लिए उन्नत बीज समय-समय पर सिंचाई, निकौनी, कटाई तथा भंडारण का समुचित व्यवस्था करना ही प्रबंधन कहलाता है।

फसलों का उत्पादन मौसम के अनुसार होता है। गेहूँ की बुआई जाड़े में, धान की बुआई वर्षा ऋतु में इत्यादि।

वर्षा ऋतु में उपजाई जाने वाली फसलें खरीफ, शीत ऋतु में उपजाई जाने वाली फसलें रबी एवं ग्रीष्म ऋतु में उपजाई जाने वाली फसलें जायद कहलाती हैं।

खरीफ फसलें – धान, मक्का।
रबी फसलें – गेहूँ, चना।
जायद फसलें – मक्का, तरबूज ।

अच्छे फसल उत्पादन के लिए निम्नलिखित क्रियाकलाप समय-समय पर करना चाहिए।
(i) मिट्टी तैयार करना या खेत तैयार करना, (ii) बीजों का चयन, (iii) बुवाई, (iv) सिंचाई, (v) निकौनी, (vi) कटाई, (vii) गहाई, उसाई एवं सफाई, (viii) भण्डारण ।

खाद एवं उर्वरक–अच्छे फसल के उत्पादन के लिए या पौधों को पौष्टिक भोजन के रूप में खाद एवं उर्वरक दिया जाता है। पौधे एवं जानवरों के अपशिष्ट जैसे गोबर, बेकार साग-सब्जियों, पौधे-पत्तियों तथा अन्य जैव अवशेष से प्राप्त कार्बनिक खाद कहलाते हैं। सूक्ष्मजीव बेकार पदार्थों को कार्बनिक पदार्थों में अपघटित कर देते हैं। इस प्रकार तैयार की हुई खाद कम्पोस्ट कहलाता है।

खाद के अलावा भी कुछ रसायनों का प्रयोग किया जाता है जिन्हें उर्वरक कहते हैं। जैसे- यूरिया, अमोनियम सल्फेट, पोटाश, पोटैशियम सल्फेट इत्यादि । उर्वरक जल में घुलनशील होते हैं तथा पौधों की जड़ों द्वारा आसानी से अवशोषित हो जाते हैं। फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है। परन्तु मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने के लिए उर्वरकों के स्थान पर जैविक खाद का प्रयोग करना चाहिए तथा दो फसलों के बीच कुछ समय के लिए खेत को खाली छोड़ देना चाहिए।

उर्वरक एवं खाद में अन्तर-

* जैविक खाद के लाभ-

https://www.evidyarthi.in/

	उर्वरक	खाद
1.	उर्वरक प्रायः अकार्बनिक लवण है।	खाद एक प्राकृतिक पदार्थ है जो गोबर मानव अपशिष्ट एवं पौधों के अवशेष के विघटन से प्राप्त होता है।
2.	उर्वरक का उत्पादन फैक्ट्रियों में होता है।	खाद खेतों में बनाई जाती है।
3.	उर्वरक से मिट्टी को ह्यूमस प्राप्त नहीं होती है।	खाद से मिट्टी को ह्यूमस प्रचुर मात्रा में प्राप्त होती है।
4.	उर्वरक में पादप पोषक जैसे नाइट्रोजन फॉस्फोरस एवं पोटैशियम प्रचुरता में होता है।	खाद में पादप पोषक कम मात्रा में होते हैं।

→ जैविक खाद से मिट्टी में जल सोखने की क्षमता में वृद्धि होती है।
→ जैविक खाद से मिट्टी भुरभुरी एवं सरंध्र हो जाती है।
→ जैविक खाद से मित्र जीवाणुओं की संख्या में वृद्धि हो जाती है।
→ जैविक खाद से मिट्टी का गठन में सुधार होता है।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/